

यूके टीचर्स की भट्टी से चुने हुए ज्ञान रत्न

जैसे कि बाबा ने अब इशारा दिया है कि हम कम बोले और उसके बजाए सभी को अपनी रियल्टी और रॉयल्टी का अनुभव कराने वाले वायब्रेशन्स उन तक पहुंचाये। सभी को हम समदृष्टि से देखें जैसे कि बाबा ने देखा। ऐसा नहीं कि मैं कहूँ 'फलाना ऐसा है, फलाना वैसा है'।

मेरे सोचने का तरीका

अगर हम कहें कि हम अभी तक सोच रहे हैं कि मन्सा सेवा क्या है? यह है बचपन की स्टेज अगर आपको कुछ करने के लिए कहा जाये और आप कहो कि 'मैं इसके बारे में सोचूंगी', 'मैं देखूंगी' उसी समय 'रुको और अपने आप से पूछो किस बात ने आपको इस बात पर सोचने को मजबूर किया कि मैं उसके बारे में सोचूंगी। मेरी सोच के पीछे कारण क्या है?

जब हम चीजों के बारे में बहुत ज्यादा सोचना शुरू कर देते हैं - तब हम समय गंवाते हैं। यह तो ऐसे ही है कि अगर कोई ड्राइवर अपने ही ख्यालों में खो जाये, अपने आप में गुम हो जाये और पिछली किसी बात पर सोचता रहे तो वह बाहर जाने के रास्ते को भूल जायेगा। और उसका समय फिर से रनवे पर आने में व्यर्थ हो जायेगा। तब आप गिल्टी फील करते हो और उसी के कारण आपका टेन्शन बढ़ जाता है।

जब हम समय, संकल्प और सम्पत्ति व्यर्थ गंवाते हैं तब हम तनावग्रस्त हो जाते हैं।

अव्यक्त और साकार बाबा दोनों ने हमें बहुत ही प्यार की पालना दी हुई है, क्यों? क्योंकि हम सभी चिन्ताओं से मुक्त हो जायें और किसी भी बात की सोच हमें ज्यादा न चले। यह तब होगा जब हम अपने दृष्टि और तनाव के साथ के अपने अनुभवों में बड़े होंगे। छोटे बच्चों को कभी टेन्शन करते हुए देखा है, क्योंकि उनको पता है कि उनके लिए जिम्मेवार उनके माँ-बाप हैं। और यही गुह्य राज हमें भी समझने की जरूरत है कि मैं ईश्वर का बच्चा हूँ और वही मेरे लिए जिम्मेदार है। वो मुझे प्यार और पालना देने में, मुझे आगे बढ़ाने में सभी प्रकार की हदों से पार जा सकता है। उस दिन बाबा की साकार वाणी में बाबा ने यह भी कहा कि शहर में लोगों को खाने के लिए अनाज नहीं भी होगा, देश की सेना जो कि देश के रक्षक हैं वो भी कुछ नहीं कर पायेंगे, ऐसे समय पर बाबा का वायदा है कि मेरे बच्चे कभी भी भूखे नहीं रहेंगे। हम शिव शक्ति पाण्डव सेना हैं।

कर्मों का खाता

समझों कि मुझे चिन्तायें सताती हैं, मैं अपने भविष्य के विषय में सोचकर स्वयं को असुरक्षित महसूस करती हूँ, पर मुझे न अपने बारे में न दूसरों के बारे में किसी भी प्रकार की चिन्ताओं से घिरने नहीं देना है, नहीं तो मैं बाबा को कैसे याद कर पाऊंगी। और जो बाबा को याद नहीं कर पायेगा, उसे टेन्शन का अनुभव होगा।

मुझे यह अच्छी तरह से समझना है कि हरेक व्यक्ति का उसका अपना कर्म का खाता होता है। वे सभी अपने अच्छे या बुरे कर्मों का फल पाते हैं। मुझे उसके बीच में जाने की जरूरत नहीं है। जो भी कर्म के खाते हैं वो बिल्कुल सही और सटीक हैं। मैं इसमें क्या कर सकती हूँ! बस एक ही काम कर सकती हूँ, मैं अपने कर्म, किसी भी भय, लोगों के प्रति मोह, जिनके साथ मेरा कार्मिक एकाउन्ट जुड़ा हुआ है उससे मुक्त होकर व्यक्तिगत श्रेष्ठ पुरुषार्थ करूंगी। मानलो कि जिस व्यक्ति के साथ में जुड़ी हुई हूँ वह कोई ऐसा कर्म करता है जो कि वास्तव में दुःखदायी है तो मैं उस दुःखदायी फीलिंग के पिंजड़े में ना फसूँ। जब मैं डिटैच और अप्रभावित रहने का पुरुषार्थ करती हूँ तो मेरे वायब्रेशन्स उन आत्माओं को जरूर मदद करेंगे। इसके ऊपर जाकर मेरे कर्म इतने श्रेष्ठ हों कि वे लोग उससे प्रेरित हों, उन्हें इससे शक्ति मिले कि वो भी अपने जीवन में ऐसे श्रेष्ठ कर्म करें, जिससे उन्हें उनका बहुत अच्छा एवजा मिले। तभी उनकी टेन्शन कम होगी।

समझो कि मैं उनके सामने एक अच्छा उदाहरण बनने के बावजूद भी वो नहीं बदलते हैं, फिर भी मुझे तो खुश रहना ही है।

सम्मान देना और पाना

सफर में चलते-चलते हम और भी यात्राओं पर चले जाते हैं जिसमें हमें एक दूसरे को जानने और समझने को मिलता है। हमारा आपसी स्नेह बढ़ता, एक दूसरे के प्रति सम्मान बढ़ता और उसी से मैत्रीय भाव उत्पन्न होता है। इसी प्रकार हमारी इस ईश्वरीय यात्रा में भी यही सबकुछ होता है। हमारा आपस में प्रेम और सम्मान का सम्बन्ध होना चाहिए। हालांकि वर्तमान समय यह देखा जाता है कि बाबा के कई बच्चे अपने दिलों में दुःख की भावनाओं को लेकर चलते हैं। वो महसूस करते हैं कि उन्हें उचित सम्मान नहीं मिल रहा है, लोग उनसे ठीक से बात नहीं करते हैं। कठोरता और पुरानी रीति से चलते हैं। ऐसे समय पर वे सोचते हैं कि मैंने आज तक इतना कुछ किया हुआ है फिर भी यह व्यक्ति मेरी कदर नहीं करता है। देखो यह लोग कैसे हैं, कैसे मेरे से बात करते हैं, वास्तव में इस तरह से सोचने के बजाए मुझे अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या कारण है जो मुझे सम्मान नहीं मिलता है? क्या मैं दूसरों को उचित सम्मान देती हूँ? जब हम दूसरों को सम्मान देते हैं तब यह हो नहीं सकता कि मुझे न मिले। अगर एक बार भी मैं अपने सेवा साथियों से प्रेम पूर्वक और सम्मानपूर्वक व्यवहार नहीं करती हूँ तो भी उनको मेरी तरफ से प्यार और सम्मान की भावना का अनुभव नहीं होगा। वे मेरे साथ मजबूरी में काम करेंगे। भय की छाया में रहकर काम करेंगे। अपने दिल से और हल्के होकर वो सेवा नहीं कर पायेंगे।

मन्सा सेवा और चित्त

मेरे अन्दर में क्या चल रहा है। दिल, मन, बुद्धि, चित्त और विवेक इनको मुझे परखने की आवश्यकता है। उसके बाद मुझे देखना होगा कि मेरी दृष्टि और वृत्ति कैसी है?

दिल जानता है और अनुभव करता है कि मेरा मन और बुद्धि किन बातों से गुजर रही है।

चित्त दिल का मित्र है और उसे कहता है, यह सही है, यह गलत है।

चित्त बीच में आता रहा है, वो पुरानी स्मृतियों को सामने लाता है।

जब दो लोग एक ही प्रकार की चुनौती का सामना करते हैं तब एक कह सकता है कि मेरे सामने यह समस्या काफी समय से है लेकिन उसी समय दूसरा कह सकता है कि मुझे बाबा की बहुत अधिक मदद और आधार मिलता रहा है, यह बहुत अदभुत है। बहुत अच्छी यादें और बाबा की स्मृति यही उनकी चित्त में रहता है। मुझे अपने चित्त को बहुत अच्छी यादों से भरना होगा। मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? इस स्मृति से मैं चित्त को पूरी तरह से भर लूँ।

चित्त का संस्कारों के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध और बन्धन होता है।

मुझे अपने भूतकाल को पूर्णतः और बहुत समझ के साथ भूलना होगा। जो पल बीत गया उसे मैं मिटाती जाऊँ, अगर मैं भूतकाल की दुःखदायी बातों को याद करती रहूँगी तो या तो मैं उदास होऊँगी या फिर मूँझती रहूँगी या फिर ऐसा व्यवहार या ऐसी बात करूँगी जिससे दूसरों को परेशानी हो। हो सकता है कि मैं कुछ गलत न कहूँ परन्तु मेरे व्यवहार में कुछ ऐसी बात जिससे दूसरों को दुःख होगा। भूतकाल की स्मृतियाँ मेरी वाणी पर चढ़ती रहेगी। न मुझे अपने भूतकाल को याद रखना है ना ही मुझे औरों के द्वारा मेरे साथ बिताये हुए कल को याद रखना है। और इसके लिए मुझे अपने चित्त को शुद्ध करना होगा।

मुझे याद में रहकर दूसरों को याद दिलाने की सेवा करनी है। अगर कोई मेरे जीवन में आता है तो वो मेरे द्वारा उत्पन्न यायब्रेशन्स के कारण ही होता है। उन्हें बाबा की याद आये अगर कोई ठीक नहीं रहता है तो उन्हें दूर से ही बहुत प्रेम के

वायब्रेशन भेजते जायें, यही मन्सा सेवा हमें करने की जरूरत है। हालांकि यह मैं तभी कर सकती हूँ जब मेरा चित्त बहुत साफ और स्वच्छ होगा। मेरे मन और दिल में किसी के प्रति कुछ भी नहीं होगा।

अगर मेरा चित्त पहले से ही भरा हुआ नहीं होगा। किसी परिस्थितियों के प्रभाव में नहीं होगा तो बाबा मेरे द्वारा वायब्रेशन भेज सकेंगे।

किस प्रकार के मन से मन्सा सेवा सम्भव है

अपने मन से पूछो 'क्या कर्मेन्द्रियाँ मुझ पर राज्य करती हैं? क्या वो मुझे वही करने पर मजबूर करती हैं जो वो चाहती हैं?'

अपने मन से पूछो हे मेरा मन, तू किसी में अटका हुआ तो नहीं है ना! तू किसी के ऊपर प्रभावित तो नहीं है? कोई ऐसी बात तो नहीं है जो तेरे सामने रुकावट पैदा करती है? तुम किसी में फंसा हुआ तो नहीं है?

इन सभी बातों से लिपटा हुआ मन कभी भी अपने आप में बाबा की शक्ति को खींच नहीं पायेगा, ना ही उस शक्ति को दूसरों को दे पायेगा। इस प्रकार का मन मन्सा सेवा नहीं कर सकता है, इसलिए बाबा कहते हैं "मनमनाभव - मन को मेरे में लगाओ"। अपनी सम्पत्ति, सम्बन्ध और संस्कारों से इसे दूर हटाओ।

मन जो कि मनमनाभव है वही मध्याजीभव भी हो सकता है। जब मैं यह दोनों हूँ तब मेरा दिल, मन, बुद्धि, चित्त और विवेक बाबा की कही हुई श्रेष्ठ बातों को स्वीकार कर सकेगा। ऐसा चित्त ही प्रसन्न होगा और वो प्रसन्नता मेरे चेहरे पर दिखाई देगी। तब फिर यही मेरी मनोवृत्ति बन जायेगी। यह स्थिति चित्त से सम्बन्धित बातों से भी और अधिक ऊंची है। मेरी आंखों से मेरे व्यवहार का पता चलता है जिससे मेरी दृष्टि कहा जाता है। मेरे देखने से ही चीजों में परिवर्तन आता जाता है।

ऐसे व्यक्ति के लिए लोग कहते हैं कि इनका व्यवहार बहुत शुद्ध है। ऐसी आत्मा बाबा से पूरी तरह से सच में दृष्टि ले सकती है। इस तरह से बाबा से दृष्टि लेने से उनकी अपनी दृष्टि भी ऐसी हो जाती, जो जिस पर भी उनकी दृष्टि पड़ती उन्हें एक अनोखे और मधुर प्रसन्नता का अनुभव होता है।

चित्त के बारे में और अधिक

एक बार हम बाबा के बन जाते हैं तो ज्ञान के पहले का हमारा जन्म जैसे पास्ट की बात हो जानी चाहिए। जैसे कि वो कोई पिछला जना हो। पास्ट के मित्र सम्बन्धी आदि की सर्व स्मृतियाँ अब मिट जानी चाहिए। हम में से कई फिर भी अपने इन जन्म के पास्ट को आज भी अपने साथ रखते हैं और समझते हैं कि यह यथार्थ है। इसी कारण से अब तक भी हम अपने पुराने संस्कारों के आधार पर चलते हैं। अब भी उन्हें इस्तेमाल करते हैं। अब तक भी हमने यह अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया है कि हम किसके बच्चे हैं। अब हम बाबा के बच्चे हैं। तो अब हमारे संस्कार भगवान के संस्कारों के अनुरूप हों। जब हम इस बात को अपने चित्त पर धारण करेंगे तब वो हमारी वृत्ति और व्यवहार को परिवर्तन करेगा।

एक बार मैंने महसूस किया कि मेरी खुशी थोड़ी कम हो गई है, मैंने बाबा से पूछा और बाबा ने उस वक्त मुझे जवाब दिया हालांकि मैंने अपने लौकिक से मोह छोड़ दिया है लेकिन फिर भी वो मेरे से मोह रखते हैं। हमें अपने भावनाओं की गुणवत्ता पर बहुत अधिक सावधान और सचेत रहने की जरूरत है। अगर कभी हम महसूस करते हैं कि जरा भी उसमें मिलावट है तो मुझे इसे दूढ़ना होगा कि ऐसा क्यों और तुरन्त उसके लिए कुछ करना होगा। मुझे यह अच्छी तरह से अहसास करना होगा कि मेरे अन्दर क्या चल रहा है, इस बात को बढ़ने नहीं देना है। अगर यह बात बढ़ती है तो हर वक्त मैं बाबा से शक्ति और सकाश लेने से वंचित रह जाती हूँ।

बाबा का बनने के बाद भी अब तक हम पुराने संस्कारों को यूज करते हैं तो यह बहुत बड़ा कर्म का हिसाब-किताब बनता है। मेरे अन्दर जो कमियाँ और खामियाँ हैं उसे खत्म करने की गहरी इच्छा मुझमें होने की आवश्यकता है। नहीं तो अगर अन्त में कोई भी बचे हुए कुछ संस्कार मुझमें रहते हैं तो अनुभव होगा कि वो चीज मुझे पीछे खींच रही है। मैं बोल नहीं पाऊंगी। अब भी अगर ऐसी कोई बात मुझमें है जो सही नहीं है तो उस कारण मेरा मुख ज्ञान के लिए खुलेगा नहीं। मैं मुख से 'बाबा' कह नहीं सकूंगी। जैसे कि कईयों में अहंकार होता है, जो कि बहुत अलग-अलग रूपों से दिखाई देता है, वे सोचते हैं कि वे इतने लम्बे समय से ज्ञान में चलते हैं, वो साकार बाबा से भी मिले हुए हैं तो उनको कुछ खास प्रकार की सहूलतें मिलनी चाहिए। जैसे कि उनके द्वारा बताये गये सुझाव अमल में लाये जाने चाहिए आदि-आदि..। कुछ लोग बहुत जोश से यह भी कहते हैं कि यज्ञ की कई बातें, कई प्रथायें ऐसी ऐसी हैं, जिन्हें बदलना चाहिए। उन्हें ऐसे लगता है कि उनके द्वारा बताई गई नयी बातों को अपनाना चाहिए। और अगर ऐसा नहीं होता है तो वो नाराज हो जाते हैं। अगर मेरा सेवासाथी मैं जैसे सोचता हूँ वैसे नहीं सोचता है, उसके परिणाम स्वरूप मैं सूक्ष्म रूप से अपसेट हो जाता हूँ, थोड़ा सा नाराज हो जाते हैं। उनका मूड थोड़ा सा गम्भीर हो जाता है। अगर इस तरह की बात एक बार भी मुझसे हो जाती है तब मैं औरों के साथ मिलजुलकर सेवा करने की योग्यता को खत्म कर देती हूँ। जैसे कि उस दिन किसी ने मुझे इशारा दिया कि अगर मैं उनके प्रति समय प्रति समय थोड़ा बहुत प्रोत्साहन देती रहूँ तो वो प्रोत्साहन उनके लिए उमंग-उत्साह का काम करेगा। उस बात को मैंने तुरन्त स्वीकार किया और उनको धन्यवाद दिया। मैंने उनको कहा कि बिल्कुल सच्चाई से उनके मूल्य को समझा जायेगा। उस दिन के बाद मैंने उनमें हर बार यह महसूस किया कि वो बदल रहे हैं। यह बहुत अच्छा हुआ कि उन्होंने इस बात को मेरे सामने व्यक्त किया। इस बात को कुछ समय के लिए उन्होंने दिल में रखा और जबकि उन्होंने अपने आपको व्यक्त किया तो अपने आपको बहुत हल्का महसूस कर रहे हैं। जब तक मैं अपने मन को स्वच्छ नहीं करती हूँ तब तक मेरी मन्सा बाबा से शक्ति को धारण करने के लिए तैयार नहीं होगी। जब मेरा दिल हल्का होता है तब मेरे साथ सबकुछ अच्छा ही अच्छा होता जाता है। यही कुछ बातें हैं जिनपर अब हमें काम करने की जरूरत है। अगर हमारे दिल में इसको धारण करने की सच्ची भावना है तो हमें सामने से इस बात में मदद करने वाली बातें सुनने को मिलेंगी। हम जो एक दूसरे से बात करते हैं वो ईश्वरीय तरीके से भरी हुई हो। हमारी आपसी बातों में ईश्वरीय प्यार भरा हुआ हो और अन्दर में यह गहरी भावना हो कि हम एक परिवार के हैं क्योंकि जो भी विचार मेरे मन के अन्दर होते हैं वो दूसरों तक जरूर पहुंचते हैं इसलिए मुझे विचारों को बहुत शुद्ध रखना है। जिससे भी मैं मिलूँ तो मुझे महसूस हो कि मैं कल्प के बाद फिर मिल रही हूँ।

जम्प लगायें

कई बार हमारे सामने कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं, हमें उनकी तरफ जरा भी नहीं देखना चाहिए, तो क्या उनको पीठ दिखाकर भाग जाना चाहिए या फिर हमें जम्प लेनी चाहिए। अगर हम भाग जाते हैं तो दूसरे भी हमारे साथ भाग जायेंगे। कई बार दूसरे हमें पीछे छोड़कर आगे चले जायेंगे तो हम दिलशिकस्त हो जायेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं कि भागो नहीं लेकिन हाई जम्प ले लो। आपको जम्प लेने के लिए हिम्मत की आवश्यकता है परन्तु एक बार जम्प ले ली तो हम दूसरी तरफ पहुंच जाते हैं और परिस्थितियाँ दूसरी तरफ कोसों दूर रह जाती हैं। तो वर्तमान समय केवल जम्प लगायें।

स्टीमर में बैठें और एरोप्लेन की सवारी करें

इस समय हम घर वापस लौटने की यात्रा पर हैं। या तो हम स्टीमर में जा सकते हैं या एरोप्लेन से जा सकते हैं। स्टीमर में जाने के लिए हालांकि थोड़ी सी हिम्मत की आवश्यकता है। किसी दिन अगर बोट थोड़ी धीमी चली तो हमें बोट पर ही रहना होगा बिना पानी में गिरे। प्लेन में बैठना बहुत आसान है, हमें केवल चेक इन तक जाना होता और आसानी से प्लेन की तरफ बढ़ सकते हैं। बोट पर चढ़ने के लिए कभी-कभी शुरुआत में हिम्मत की आवश्यकता होती है। कभी-कभी मैं घबरा जाती हूँ तो पहले से जो बोट में बैठे हैं वो मेरी तरफ मदद का हाथ बढ़ाते हैं। बोट में बैठने की खूबसूरती यह है कि हम और सभी यात्रियों के साथ बैठ सकते हैं, और उनके साथ का आनन्द उठा सकते हैं। जबकि प्लेन में सभी को अपनी-अपनी जगह पर बैठना पड़ता है। प्लेन में बैठने पर हमें पाइलेट के ऊपर विश्वास रखना होता है क्योंकि वह जानता है कि वो क्या कर रहा है। अगर रास्ते में कोई बाधा है तो मुझे केवल अपनी सीट बेल्ट बांधनी होगी। तो इसमें जानने वाली बात क्या है - यही जानना है कि इस यात्रा में किसी के ऊपर भरोसा रखना, विश्वास करना और हिम्मत रखना बहुत जरूरी है।

पुरुषार्थ और सफलता, भाई और बहनें

हमारे इस ईश्वरीय जीवन में कई बार ऐसे महसूस होता है कि चाहे कितना भी पुरुषार्थ कर लो फिर भी और पुरुषार्थ करने की जरूरत है और यह प्रक्रिया अन्तहीन है। जब हमारा पुरुषार्थ फलदायी है, जब हमें लगता है हमें पुरुषार्थ में सफलता मिल रही है तो मेहनत करना आनन्द देकर जाता है। वास्तव में पुरुषार्थ और सफलता के बीच एक विशेष बन्धन होने की आवश्यकता है। जैसे कि वो एक भाई और बहन हो, जैसे कि सफलता पुरुषार्थ की सखी हो, और वो सखी उसके साथ रहना चाहती हो, और उसके आसपास घूमना चाहती हो।

हमारी स्थिति, सेवा और सम्बन्ध

अब तक जो हमने सेवायें की हैं वो बहुत अच्छी हैं, परन्तु बाबा हमसे जो कराना चाहते हैं उसमें अब तक भी मार्जिन है। अगर मैं अपनी स्थिति पर ध्यान देती हूँ, अगर मैं अपनेआप में जो कमी है उसको भरती हूँ तो भी मैं बहुत कुछ कर रही हूँ! जैसे कि मान लो, अगर मैं एक्यूरेटली अमृतवेले हाजिर रहती हूँ तो बाबा से जो शक्ति मुझे उस समय मिलती है उसे सारे दिन में जो भी मेरे सम्पर्क में आते हैं, मुझे मिलते हैं, जिनकी मैं सेवा करती हूँ उन्हें वो मिलेगी और उसका वो लाभ लेंगे। लेकिन अगर मैं अमृतवेला मिस करती हूँ तो वही लोग इस बात से वंचित रह जाते हैं। अगर हमारी स्थिति श्रेष्ठ है तो लोगों को हमसे साक्षात्कार होंगे। और सेवा स्वतः ही हो जायेगी। लोग हमें दूर से देखेंगे और खीचे चले आयेंगे।

हर रोज़ अपने सम्बन्ध सम्पर्क वालों को कुछ नया भेजते रहना चाहिए। लोग सचमुच ऐसा कुछ ढूँढते रहते हैं जो उन्हें तरौताजा करें और जिससे मदद मिले।

एक छोटा ग्रुप बनाये और समय निकालकर ज्ञान की चिटचैट करें, यह बहुत मदद करेगा। अगर कभी कोई दिक्कत महसूस करते हैं तो उस समय अचानक चिटचैट के समय चर्चा में लाई हुई बात याद आ जायेगी। हमें एक दूसरे के भी नजदीक आना होगा। लोग हमको एक समान होते हुए देखें, हमारे आपसी मतभेद लोगों को न दिखाई दें। खुद को समझने के लिए अन्तर्मुखता की आवश्यकता है। लेकिन दूसरों को समझने के लिए धैर्यता और नम्रता की जरूरत है। लोग सचमुच चाहते हैं कि उन्हें कोई समझे। बाबा को समझना सबसे सहज है।

बाबा का ज्ञान मैं इस तरह से दूसरों के साथ बांटू जिससे कि सुनने वाले के दिल में निमित्त टीचर और बड़ों के प्रति स्नेह और सम्मान की भावना उत्पन्न हो। हरेक निमित्त की अपनी कोई विशेष विशेषता होती है। कोई भी एक समान नहीं होते हैं, हरेक का पार्ट वन्डरफुल है। और अन्ततः हम सभी एक हैं। तो जो भी मैं शेयर करूँ उससे एकता को बढ़ावा मिले।

मुख्य बात, 'मैं' और 'मेरा' अगर मुझमें किसी भी रूप में है तो कुछ भी हो मेरे इस नये जन्म से मिलने वाले सम्पूर्ण लाभ से मैं विमुख हो जाऊंगी। इस नये जन्म जिसमें मैंने दुबारा जीवन पाया है उसका मैं पूरा लाभ नहीं ले पाऊंगी। वो अन्दरूनी मधुरता और गहरे खुशी का अनुभव नहीं कर पाऊंगी। और ना ही मैं उस परम सन्तुष्टी का अनुभव कर सकती हूँ। मैं ऐसा दिल विकसित नहीं कर सकती हूँ जो सभी को खुशी और सन्तुष्टता प्रदान करे। कोई भी मेरे सामने आयेगा उसको सन्तुष्ट करने की, अनुभव कराने की इच्छा हो जिससे उसने जो अनुभव किया है, कभी भूल नहीं पायेगा। मेरे साथ की उनकी वो मुलाकात, वो क्षण उनकी स्मृति में छाप छोड़कर जायें। वर्तमान समय बहुत-बहुत लोग सर्विस के लिए तैयार हैं लेकिन..... बहुत कम लोग ऐसे हैं जो स्नेह की लेनदेन करें। इसके लिए केवल यह भावना अन्दर से हो कि मैंने बाबा से बहुत कुछ पाया है, वह औरों को भी मिले। सेवा मेरे दिल और दिमाग पर हावी न हो जाये। ऐसे लगता है कि हम सेवा का असली उद्देश्य भूल चुके हैं, और वो है सभी के साथ स्नेह की लेनदेन। कई लोग सोचते हैं कि वो बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं लेकिन वास्तव में सेवा ही उनकी शत्रु हो चुकी है। जैसे बाबा को आप जानते हो वैसा ही औरों को अनुभव कराना आसान नहीं है। लोग तभी बाबा को जान पायेंगे, पहचान पायेंगे जब उन्हें कोई अर्थ सहित अनुभव हो। प्राप्ति की एक गहरी अनुभूति हो।